REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2022

वैदिक संहिताओं में पारिवारिक चेतना

डॉ. कनक रानी
एसो0 प्रोफेसर– संस्कृत विभाग, आर्य महिला डिग्री कालेज, शाहजहांपुर (उ0 प्र0)

प्रस्तावना–

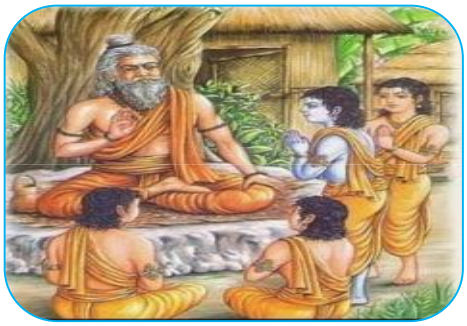

परिवार एक शाश्वत संस्था है। बालक के मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास में परिवार का अतीव योगदान है। बालक के सर्वांगीण उन्नति हेतु परिवार का बड़ा दायित्व है। परिवार में माता पिता, बच्चे, बूढ़े परिजन सभी सुंदर जीवन जिएं, यह आवष्यक है। एतदर्थ परिवार का वातावरण सकारात्मक हो, अनुकूल हो, इसको लक्ष्यगत करते हुए वैदिक संहिताओं ने उच्च पारिवारिक मूल्यों के बारे में शिक्षित किया।

निष्कर्ष–

वैदिक शिक्षाओं के सुप्रभाव से पारिवारिक सदस्यों के मध्य भावनात्मक लगाव होता है जो उनमें आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होता है, साथ ही परिवारी जनों के मध्य सहयोग के भाव पल्लवित होते हैं। यहां रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पारिवारिक संरक्षण मिलता है। सभी पारिवारिक कर्तव्य निभाते हैं तथा सांस्कृतिक तत्वों को अपनाते हैं। इस तरह वेदविहित उपदेशों ने पारिवारिक परिवेश को सकारात्मक बनाने का प्रयास किया है।

उद्देश्य–

वर्तमान में परिवार विघटित हो रहे हैं। ध्यातव्य है कि परिवार प्राथमिक संस्था है जहां नए सदस्य का समुचित लालन–पालन होता है। परिवार एक व्यवस्था प्रदान करता है जहां बालक सुसंस्कृत एवं परिष्कृत व्यक्तित्व से संपन्न बनकर समाज को लाभान्वित करता है। परिवार के द्वारा परिवारी जन सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव से आच्छादित होते हैं। पारिवारिक विघटन चिंता का विषय है। इस तथ्य को दृष्टिगत करते हुए वैदिक षिक्षाओं के माध्यम से परिवार संस्था को सुदृढ़ बनाने का प्रयास सामयिक आवष्यकता है।

बीज शब्द– परिवार, शिक्षा, प्रेम, सद्भाव, उपदेष.

पारिवारिक जीवन को व्यवस्थित करने में वैदिक शिक्षा ने मानव का मार्गदर्शन किया। समाजिक प्रगति में परिवार संस्था का विशेष योगदान होता है क्योंकि परिवार में ही नए सदस्यों का सृजन होता है। परिवार ही नवसृजित सदस्य का संस्करण और परिष्करण करता है। बालक जीवन मूल्यों की शिक्षा परिवार द्वारा ही प्राप्त

करता है। इस तरह परिवार ही बालक में सांस्कृतिक विशिष्टताओं को संजोने में अहं भूमिका निभाता है। अतः परिवार की महत्ता स्वतः प्रमाणित होती है।

परिवार ही निर्माण का आधार है। परिवार नैतिकता का प्रशिक्षण केंद्र है। यहां व्यक्तित्व का निर्माण होता है, नैतिकता का– मर्यादा का–अनुषासन का परिपालन करना सिखाया जाता है। पारिवारिक शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन संयत और मर्यादित होना कदाचित् ही संभव है। परिवार की शिक्षा से जीवन में नियमितता आती है, अनुशासन आता है तथा उच्छृंखलता का ह्रास होता है। पारिवारिक संस्कारों के सुप्रभाव से बालक काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, आदि मनोविकारों से दूर रहने के लिए शिक्षित किया जाता है। पारिवारिक दिग्दर्शन में ही बालक का समुचित विकास संभव है। इस दृष्टि से परिवार का महत्व स्वयं सिद्ध है।

परिवार को सुसंस्कृत, सुसभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने की दिशा में वेदों के अन्तर्गत परिवार के सदस्यों को उपदिष्ट किया गया। वस्तुतः कोई भी समाज तभी प्रशंसनीय होता है जब उसमें रहने वाले सामाजिको में नैतिक मूल्यों का समावेश होता है और प्रेम, एकता, सामंजस्य, सहानुभूति, सद्भाव, दया, सद्विचार आदि आदर्श होते हैं। आदर्शों से संयुक्त सामाजिकता के परिणामस्वरूप राष्ट्र प्रगतिषील बनता है। इस दृष्टि से परिवार संस्था का विशेष महत्व है।

अतः परिवार को सुंदर बनाने के लिए पति– पत्नी में पारस्परिक आत्मीयता के लिए शिक्षा दी गई। पति पत्नी के साथ– साथ रहने पर ही गृहस्थ पूर्णता को प्राप्त करता है। पारिवारिक परिवेश आदर्श हो, मर्यादा, संतोष और व्यवस्था की संस्थिति हो, इस हेतु वेदों में शिक्षित किया गया। यहां द्वेष से दूर रहने का परामर्श है, परस्पर सम्मान और प्रेम के साथ जीवन जीने की प्रेरणा है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परिवार समाज की एक छोटी संस्था है। यहां मनुष्य का संबंध परिवार से होता है और समाज से जुड़ता है। पारिवारिक विशिष्टताओं को वह स्वतः ही आत्मसात कर लेता है। इस तरह परिवार के संस्कार मानव को प्रभावित करते हैं। मानव के गुणों से समाज प्रभावित होता है।

पति–पत्नी के मध्य पारस्परिक प्रेम से परिवार में स्थिरता, सुदृढ़ता का आधान होता है। इसलिए वेदों में मानसिक मिलन के सन्दर्भ में शिक्षित किया गया–

समंजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।।1

यहां संज्ञान में आता है कि दाम्पत्य शिक्षा का समाज के विनिर्माण में विशेष महत्व है। यहां दंपति का व्यवहार, बालक के प्रति दायित्व , सदस्यों के प्रति कर्तव्य उल्लिखित हैं। वेदों में कौटुंबिक कर्तव्यों के संदर्भ में शिक्षित किया। कुटुंब के सदस्य परस्पर किस प्रकार का आचरण एवं व्यवहार करें? इस संदर्भ में शिक्षित करते हुए कहा गया कि–

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शांतिवाम्।2
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यंच सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।3

भावार्थ है कि पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, माता की इच्छा को मानने वाला हो, स्त्री शांत–मृदु स्वर में संभाषण करे, भाई भाई में परस्पर घृणा न हो और बहन की बहन के प्रति ईर्ष्या न हो। सभी पारिवारिक सदस्य अपने व्रत का पालन करते हुए, मर्यादित रहते हुए परस्पर भद्र भाषा में बोलें।

कौटुंबिक व्यवहार के बारे में वैदिक संहिताओं में बताया गया कि घर में वृद्धजनों की सेवा की जानी चाहिए–

पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रण शतायुषा।
पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यष्नवै ।। 4
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा। 5

अर्थात पिता मुझे पवित्र करें, पितामह मुझे पवित्र करें, पितामह मुझे पवित्र करें जिससे मैं शतायु होऊँ।

अर्थात् मुझे समस्त देवगण पवित्र करें। मन और बुद्धि मुझे पवित्र करें। समस्त पंचभूत मुझे पवित्र करें। अग्निदेव मुझे पवित्र करें। उक्त मंत्रों में वृद्धजनों की सेवाभाव से परिचित कराया गया। यह मंत्र संदेश देते हैं कि वृद्धजनों की सेवा समाज को सकारात्मकता प्रदान करती है और अनुकूलता का समावेश करती है। वृद्धों की सेवा मनुष्य का नैतिक दायित्व है। उनके ज्ञान से लाभान्वित हो समाज में गुणवत्ता आती है, साथ ही वृद्धों के प्रति कृतज्ञता भी ज्ञापित होती है।

इतना ही नहीं, परिवार में प्रत्येक सदस्य के लिए सुखपूर्वक रहने के लिए अनुकूलता हो, इस ओर भी वैदिक संहिताएं उपदिष्ट करती हैं। मंत्रों में कहा गया है कि–

सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु ष्वा सस्तु विश्पतिः।
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः।।6
तथा
आत्मानं पितरं पिता पौत्रं पितामहम् जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये।।7

अर्थात् माता, पिता, ज्ञाति, बांधव, परिजन, पशु, सब सुखपूर्वक रहें। आत्मीय जन, पितृ, पुत्र, पौत्र, पितामह, पितामही, माता और प्रियजनों को मैं सम्मान पूर्वक बुलाता हूं। इस प्रकार न केवल परिवार के प्रति अपितु परिवार से जुड़े हुए सभी सदस्यों के प्रति सद्व्यवहार की शिक्षा दी गई।

परिवार के मध्य प्रेम विस्तारित होना चाहिए, द्वेष का परिहार होना चाहिए। प्रेम ही पारिवारिक बंधन को प्रगाढ करता है। पारिवारिक सदस्यों के बीच प्रेम भाव की अपरिहार्यता ळें प्रेम के अभाव में परिवार सम्यक् रूप से गतिशील नहीं हो सकता। प्रेम आत्मीयता की वृद्धि करता है।

वेदों में संदेश दिया गया कि मैं तुम्हारे हृदय को एक समान करता हूं। तुम्हारे मन को दोष रहित बनाता हूं। तुम परस्पर एक दूसरे से इस तरह स्नेह करो जैसे गौ अपने नवजात बछड़े को निःस्वार्थ स्नेह करती है–

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्योअन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।8

सद्भावों को पनपने का अवसर देती है वैदिक शिक्षा। यह एक दूसरे के साथ दया, स्नेह सहानुभूति, संवेदना, सहयोग, सहायता हेतु प्रेरित करती है। यहां सभी के लिए मिलकर चलना और समान बोलना श्रेयस्कर बताया गया–

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम।9

अन्यत्र वैदिक शिक्षा दी गयी कि समान संकल्प वाले, समान हृदय वाले तथा समान मन वाले बनो। यह परिवार में एकत्व का संवाहक तत्व है–

समानी व आकूतिः समाना ह्रदयानि वः।
समानमस्त वो मनो यथा वः सुसहासति।।10

वैदिक संहिताओं में उपदेश दिया गया है कि सभी लोग एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखो। मैत्री से परिवेश सकारात्मक बनता है। वैदिक मंत्र मैत्री का उपदेश करता है–

दृते दृंह मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।11

वैदिक संहिताओं में कहा गया कि द्वेष से संयुक्तता समीचीन नहीं। यह प्रेम का ह्रास करता है। तुम्हें द्वेष भाव से मुक्त बनाता हूं–

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतन।12

संयत जीवन प्रणाली की ओर उन्मुख करने के लिए गृहस्थाश्रमी को अर्थापार्जन के पवित्र साधनों की ओर भी प्रेरित किया गया।

वेदविहित मानव मूल्य पारिवारिक एकता के कारक तत्व बने। नीति मूल्यों की आधारशिला पर सुस्थिर परिवार की संरचना हेतु उपदिष्ट वैदिक शिक्षा सार्वकालिक एवं सार्वत्रिक है।

इन शिक्षाओं से आदर्श कुटुंब की संकल्पना आकार लेती है। यहां परिवार के सदस्यों के लिए एक दूसरे के प्रति प्रेम पूर्ण व्यवहार की शिक्षा है, नैतिक मूल्यों का उपदेश है, मानव मूल्यों का संदेश है उदात्त और व्यापक व्यवहार का मार्गदर्शन है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी आदर्श परिवार बनाने हेतु वैदिक शिक्षा मार्गदर्शिका बन सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1–ऋग्वेद / 10 / 85 / 47
2– अथर्ववेद / 3 / 30 / 2
3– अथर्ववेद / 3 / 30 / 3
4–यजुर्वेद / 19 / 37
5–यजुर्वेद / 19 / 39
6–ऋग्वेद / 7 / 55 / 5
7– अथर्ववेद / 9 / 5 / 30
8– अथर्ववेद / 3 / 30 / 1
9–ऋग्वेद / 10 / 191 / 2
10–ऋग्वेद / 10 / 191 / 4
11–यजुर्वेद / 36 / 18
12–ऋग्वेद / 10 / 63 / 12